*Shodh Sangam Patrika*
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

# कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दृश्य कला में प्रयोग: भारत में रचनात्मकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का रूपांतरण

**श्री अभिषेक भट्टाचार्य [1], डॉ. लवनीश शर्मा [2]**
[1,2] सहायक प्राध्यापक, स्कूल ऑफ फाइन आर्ट, एमिटी विश्वविद्यालय, कोलकाता

## सारांश

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) कई रचनात्मक क्षेत्रों में क्रांति ला रही है, जिनमें दृश्य कला भी शामिल है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल कलात्मक सृजन को ही नहीं बदल रही है, बल्कि तकनीक, रचनात्मकता और सांस्कृतिक पहचान के बीच के संबंधों को भी नए सिरे से परिभाषित कर रही है। यह शोध-पत्र भारत में दृश्य कला पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बहुआयामी प्रभावों की पड़ताल करता है, जिसमें समकालीन रचनात्मकता, पारंपरिक कलात्मक अभ्यास, और सांस्कृतिक आख्यानों पर इसका प्रभाव शामिल है। यह अध्ययन अंतःविषय दृष्टिकोण से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कला निर्माण, प्रदर्शन, और व्याख्या में एकीकरण को विश्लेषित करता है, साथ ही इससे जुड़ी नैतिक चिंताओं और भविष्य की संभावनाओं को भी सामने लाता है।

**मूल शब्द**: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, दृश्य कला, तकनीक के माध्यम से सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, डिजिटल कला और परंपरा, मशीन लर्निंग और दृश्य संस्कृति, मानव-कृत्रिम बुद्धिमत्ता सहयोग।

## 1. भूमिका

हाल के वर्षों में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक तकनीकी विषय से आगे बढ़कर एक व्यापक शक्ति बन चुकी है, जो वैश्विक स्तर पर रचनात्मक अभिव्यक्तियों को आकार दे रही है। दृश्य कला का क्षेत्र, जो पारंपरिक रूप से मानवीय भावना, अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक प्रतीकों पर आधारित रहा है, अब बुद्धिमान एल्गोरिदम और संगणकीय रचनात्मकता द्वारा संचालित एक महत्वपूर्ण बदलाव के दौर से गुजर रहा है। जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ अधिक उन्नत होती जा रही हैं जो न केवल छवियाँ उत्पन्न कर सकती हैं, बल्कि कलात्मक शैलियों की नकल कर सकती हैं और मानवों के साथ मिलकर कलाकृतियाँ भी बना सकती हैं वैसे-वैसे कलाकार और मशीन के बीच की सीमाएँ धुंधली होती जा रही हैं। यह परिघटना वैश्विक कलात्मक समुदाय में उत्साह और बहस दोनों का कारण बन रही है, और भारत इस सांस्कृतिक-प्रौद्योगिकीय संगम का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा है।

भारत, जो अपनी विविध दृश्य कलात्मक परंपराओं जैसे शास्त्रीय मंदिर भित्ति चित्र, लघुचित्र, और वारली, मधुबनी तथा पट्टचित्रा जैसी लोक कलाओं के लिए विख्यात है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कला के संगम का अध्ययन करने के लिए एक विशिष्ट संदर्भ प्रदान करता है। ये परंपराएँ केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि ये ऐतिहासिक स्मृतियों, सामाजिक मूल्यों और क्षेत्रीय पहचानों की संवाहक भी हैं । इस गहराई से

प्रतीकात्मक और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध कलात्मक परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एकीकरण वर्तमान कलात्मक प्रतिमानों को एक ओर जहाँ चुनौती दे सकता है, वहीं दूसरी ओर उन्हें विस्तार भी दे सकता है। एक ओर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऐसे उपकरण उपलब्ध कराता है जो कला निर्माण को लोकतांत्रिक बना सकते हैं, जिससे औपचारिक प्रशिक्षण न रखने वाले लोग भी जटिल कलाकृतियाँ बना सकते हैं। दूसरी ओर, यह मौलिकता, रचनाकार की पहचान, और सांस्कृतिक प्रामाणिकता जैसे पारंपरिक सिद्धांतों को प्रश्नों के घेरे में लाता है।

भारतीय समकालीन कला जगत ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल एक उपकरण के रूप में नहीं, बल्कि रचनात्मक प्रक्रिया में एक सह-निर्माता के रूप में देखना शुरू कर दिया है। भारत के अग्रणी कलाकारों जैसे हर्षित अग्रवाल ने ऐसे इंटरैक्टिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित इंस्टॉलेशन बनाए हैं, जो पहचान, परंपरा और मानव-मशीन सहविकास जैसे विषयों के साथ संवाद स्थापित करते हैं। ये विकास इस बात की ओर संकेत करते हैं कि भारतीय कलाकार सांस्कृतिक आख्यानों की पुनर्व्याख्या हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग में रुचि ले रहे हैं, जिससे कहानी कहने के नए स्वरूप सामने आ रहे हैं जो एक ओर स्थानीय विरासत को, और दूसरी ओर वैश्विक तकनीकी परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल कला मंचों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुसंधान केंद्रों, और भारत सरकार द्वारा संचालित कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी पहलों जैसे राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीति का प्रसार, यह दर्शाता है कि भारत का कला के क्षेत्र में बुद्धिमान तकनीक के साथ संबंध तेजी से विकसित हो रहा है। इस संदर्भ में, यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि भारत में दृश्य कला को कृत्रिम बुद्धिमत्ता किस प्रकार परिवर्तित कर रही है। अध्ययन तीन प्रमुख आयामों पर केंद्रित है: मानव रचनात्मकता को सशक्त बनाने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका, पारंपरिक कला रूपों के संरक्षण और उनकी पुनर्कल्पना में इसका प्रभाव, तथा डिजिटल युग में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर इसके निहितार्थ। वर्तमान प्रवृत्तियों, कलात्मक अभ्यासों और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करते हुए, यह शोध-पत्र समकालीन भारत में तकनीकी नवाचार और कलात्मक विरासत के बीच के जटिल अंतर्संबंध को उजागर करने का प्रयास करता है।

## 2. भारत में दृश्य कला के विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका: साहित्य समीक्षा

दृश्य कला में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एकीकरण वैश्विक कला समुदायों में व्यापक रूप से अन्वेषित किया गया है, परंतु भारत में इसका विशेष मार्ग अभी हाल ही में विद्वानों की दृष्टि में आना प्रारंभ हुआ है। जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरण अधिक सुलभ होते जा रहे हैं, भारतीय कलाकार और संस्थाएँ इन तकनीकों के साथ ऐसे ढंग से जुड़ने लगी हैं जो एक ओर वैश्विक प्रभावों को दर्शाते हैं और दूसरी ओर स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों को भी समाहित करते हैं।

वैश्विक स्तर पर, विद्वानों ने संगणकीय रचनात्मकता के उदय पर बल दिया है, जहाँ मशीनें मानवीय संज्ञानात्मक कार्यों की नकल या उन्हें बढ़ाकर कलात्मक सृजन की प्रक्रियाओं में भाग लेती हैं। यह सैद्धांतिक आधार भारतीय संदर्भ में भी परिलक्षित होता है, जहाँ कलाकार और शोधकर्ता कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल एक उपकरण के रूप में नहीं, बल्कि दृश्य सौंदर्यबोध का सह-निर्माता मानते हैं। भारत के अग्रणी कृत्रिम बुद्धिमत्ता कलाकारों में

से एक, हर्षित अग्रवाल ने तर्क दिया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मानव-मशीन सहयोग के माध्यम से रचनात्मक संभावनाओं का विस्तार करता है, जिससे ऐसी नवीन कलात्मक अभिव्यक्तियाँ संभव होती हैं जो पारंपरिक "लेखकत्व" और मौलिकता की अवधारणाओं को चुनौती देती हैं।

कई भारतीय कला साधक अब जनरेटिव आर्ट, न्यूरल नेटवर्क्स और इंटरैक्टिव इंस्टॉलेशनों के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाओं का अन्वेषण कर रहे हैं। भारतीय डिजिटल कला परिदृश्य एक तकनीकी पुनर्जागरण का अनुभव कर रहा है, जिसे नई पीढ़ी के वे कलाकार संचालित कर रहे हैं जो मशीन लर्निंग एल्गोरिद्म्स के साथ प्रयोग कर रहे हैं ताकि ऐसी कलाएँ निर्मित की जा सकें जो गतिशील, उत्तरदायी और संदर्भगत रूप से गहराई से जुड़ी हुई हों। उदाहरणस्वरूप, कुछ कलाकारों ने पारंपरिक भारतीय रूपांकनों, मंदिर मूर्तिकला और लघुचित्रों पर प्रशिक्षित कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल का उपयोग करते हुए ऐसी समकालीन दृश्य कलाएँ रची हैं जो अतीत और भविष्य के बीच एक सेतु का कार्य करती हैं।

भारत में शैक्षणिक और प्रदर्शनी-संबंधी संस्थान भी इस उभरती प्रवृत्ति पर प्रतिक्रिया देना प्रारंभ कर चुके हैं। उदाहरण के लिए, इंडिया आर्ट फेयर ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित कलाकृतियों को प्रदर्शित किया है, जिससे एल्गोरिदमिक सौंदर्यबोध से जुड़े निहितार्थों पर गंभीर विमर्श प्रारंभ हुआ है। ये विकास भारतीय कला पारिस्थितिकी में एक व्यापक परिवर्तन को दर्शाते हैं, जहाँ डिजिटल परिवर्तन न केवल कला के निर्माण को, बल्कि उसके प्रदर्शनी और उपभोग के तरीकों को भी पुनर्परिभाषित कर रहा है। इसके अतिरिक्त, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कला से संबंधित नैतिक एवं दार्शनिक आयामों पर भी भारतीय विद्वानों ने ध्यान आकर्षित किया है। वे पश्चिमी कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल के बिना आलोचना अपनाए जाने के प्रति चेतावनी देते हैं और ऐसे सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील कृत्रिम बुद्धिमत्ता ढांचे की वकालत करते हैं जो स्थानीय सौंदर्यबोध और ज्ञान प्रणालियों का सम्मान करे। उनकी चिंताएँ विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में प्रासंगिक हैं, जहाँ पारंपरिक कलाकारों को विस्थापन का सामना करना पड़ सकता है यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता-निर्मित कला को मौजूदा कलात्मक अर्थव्यवस्था में समुचित रूप से समाहित नहीं किया गया। हालाँकि भारतीय दृश्य कला में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर विद्वत् विमर्श अभी अपने प्रारंभिक चरण में है, फिर भी उपलब्ध साहित्य एक सक्रिय और तीव्र गति से विकसित हो रहे क्षेत्र की ओर संकेत करता है। जैसे-जैसे भारतीय कलाकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता की रचनात्मक क्षमताओं का अन्वेषण करते जा रहे हैं, तकनीक, संस्कृति और सौंदर्यबोध के बीच सेतु निर्माण करने वाले अंतर्विषयक शोध की आवश्यकता भी निरंतर बढ़ती जा रही है

### 3. अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन भारतीय परिप्रेक्ष्य में दृश्य कला पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के परिवर्तनकारी प्रभाव की पड़ताल करता है, विशेष रूप से इस बात पर केंद्रित है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता किस प्रकार रचनात्मक प्रक्रियाओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूपों को पुनर्परिभाषित कर रहा है। भारतीय कलाकारों द्वारा मानव-कृत्रिम बुद्धिमत्ता सहयोग से निर्मित कलाकृतियों का विश्लेषण। मधुबनी, वर्ली और पटचित्र जैसी पारंपरिक भारतीय कला शैलियों की पुनर्व्याख्या, संरक्षण या डिजिटलीकरण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग की समीक्षा। गैर-पारंपरिक कलाकारों

और उभरते डिजिटल रचनाकारों को सशक्त बनाकर भारतीय कला पारिस्थितिकी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका का अध्ययन, विशेष रूप से इसकी समावेशिता और पहुँच बढ़ाने की क्षमता।

भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता-निर्मित कला से जुड़े सांस्कृतिक, दार्शनिक और नैतिक आयामों का मूल्यांकन जिसमें लेखनाधिकार, प्रामाणिकता और सांस्कृतिक दुरुपयोग जैसे मुद्दे शामिल हैं। उन संस्थागत एवं सरकारी पहलों का विचार जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता -आधारित रचनात्मकता का समर्थन या नियमन करती हैं जैसे प्रदर्शनियाँ, डिजिटल कला मंच और राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता रणनीतियाँ।

## 4. कार्यप्रणाली

यह अध्ययन एक गुणात्मक शोध पद्धति को अपनाता है, जिसमें कला इतिहास विश्लेषण, सांस्कृतिक सिद्धांत और डिजिटल मीडिया अध्ययन को मिलाकर एक अंतर्विषयक दृष्टिकोण अपनाया गया है। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और दृश्य कला से संबंधित अकादमिक जर्नल, कलाकारों के साक्षात्कार, प्रदर्शनी कैटलॉग्स और नीति दस्तावेज़ों सहित मौजूदा साहित्य की व्यापक समीक्षा के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए हैं।

भारतीय कलाकारों जैसे हर्षित अग्रवाल और इंडिया आर्ट फेयर जैसे मंचों पर प्रदर्शित कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित परियोजनाओं के केस स्टडी किए गए हैं, ताकि रचनात्मक प्रक्रियाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के व्यावहारिक अनुप्रयोग को समझा जा सके। इसके अतिरिक्त, कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित कलाकृतियों की सामग्री विश्लेषण की गई है ताकि उनमें प्रयुक्त दृश्य रणनीतियों, सांस्कृतिक संकेतों और शैलीगत नवाचारों की व्याख्या की जा सके।

यह शोध, विशेषज्ञों की टिप्पणियाँ और मीडिया कवरेज को भी सम्मिलित करता है जिससे भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित रचनात्मकता के सामाजिक और नैतिक प्रभावों को प्रसंग में समझा जा सके। यह गुणात्मक रूपरेखा तकनीक और कलात्मक अभिव्यक्ति के बीच विकसित होते संबंधों की गहन पड़ताल करने में सहायक सिद्ध होती है।

## 5. भारतीय कलाकारों द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित कलाकृतियाँ

भारतीय दृश्य कला में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाने से ऐसी नवाचारी कलाकृतियाँ उत्पन्न हुई हैं, जो तकनीक को सांस्कृतिक और दार्शनिक अभिव्यक्ति के साथ जोड़ती हैं। कई समकालीन भारतीय कलाकारों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एक माध्यम के रूप में उपयोग किया है ताकि रचनात्मकता की सीमाओं का विस्तार किया जा सके। इन कलाओं में ऐसे नए आख्यान और दृश्य भाषाएँ विकसित हुई हैं जो आधुनिकता और परंपरा दोनों का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं।

### 1. हर्षित अग्रवाल

हर्षित अग्रवाल को भारत के प्रमुख कृत्रिम बुद्धिमत्ता कलाकारों में गिना जाता है। उनकी कलाएँ मशीन बुद्धिमत्ता और मानवीय भावनाओं के मध्य संबंधों की पड़ताल करती हैं, तथा प्रायः पहचान, परंपरा और तकनीक जैसे

विषयों को संबोधित करती हैं। उनके प्रोजेक्ट "मास्क रियलिटी" (2019) में अग्रवाल ने पारंपरिक भारतीय मुखौटों जैसे छऊ और थेय्यम नृत्य में प्रयुक्त मुखौटों से प्रेरित नए डिज़ाइनों को उत्पन्न करने के लिए जनरेटिव एडवर्सेरियल नेटवर्क्स का उपयोग किया।

उन्होंने क्षेत्रीय मुखौटा छवियों के एक डेटासेट पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल को प्रशिक्षित किया, जिससे ऐसी संकरित दृश्य कलाएँ उत्पन्न हुईं जो लोक परंपराओं को एल्गोरिदमिक एस्थेटिक्स के साथ जोड़ती हैं। यह कार्य बी-फैंटैस्टिक फेस्टिवल में प्रदर्शित किया गया था और सांस्कृतिक संरक्षण एवं पुनर्परिभाषा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चाएँ प्रारंभ हुई थीं।

**छवि 1:**

छवि 1: मास्क रियलिटी (2019), हर्षित अग्रवाल

**स्रोत:** https://www.aiartonline.com/community-2019/harshit-agrawal-2/

**2. राघव के.के.**

भारतीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता-कला परिदृश्य में एक और अग्रणी हस्ती राघव के.के. हैं, जो न्यूरोसाइंस, मशीन लर्निंग और दृश्य कथा (visual storytelling) को एक साथ समेटने के लिए जाने जाते हैं। तकनीकी विशेषज्ञों के साथ सहयोग करते हुए, राघव ने “डीप मेडिटेशन” (2019) नामक एक इमर्सिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता कला स्थापना विकसित की, जो न्यूरल नेटवर्क्स के माध्यम से अवचेतन मन को चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत करती है।

इस परियोजना में राघव ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को भावनात्मक और वैचारिक इनपुट डेटा प्रदान किया, जिसके आधार पर एल्गोरिदम निरंतर परिवर्तित होती अमूर्त दृश्य रचनाएँ उत्पन्न करता है। यह कलाकृति दर्शकों को चेतना की प्रकृति और मशीन की रचनात्मक क्षमता पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है । यह कार्य कला और विज्ञान के बीच एक अभिनव संवाद का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उनकी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित कलाकृतियों को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रदर्शित किया गया है, जिनमें टेड और आर्ट बासेल जैसे प्रतिष्ठित स्थल शामिल हैं। ये कृतियाँ मानवीय-मशीन संवाद में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहानुभूति को केंद्र में रखती हैं।

**छवि 2:**

छवि 2: “डीप मेडिटेशन्स” (2019) राघव के.के. द्वारा
**स्रोत:** https://medium.com/@rohanroberts/part-2-mind-and-medium-exploring-the-intersection-of-art-and-spirituality-in-the-works-of-3481ea8ecaba

**3. वरुण देसाई**

वरुण देसाई एक बहुविषयक कलाकार और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ हैं, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग का उपयोग कर जनरेटिव आर्ट और ध्वनि-दृश्य संश्लेषण के क्षेत्र में प्रयोग कर रहे हैं। उनका प्रोजेक्ट “एल्गोरिदमिक एक्सप्रेशन्स” (2020) कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम के माध्यम से मानवीय गति की व्याख्या करता है और उसे वास्तविक समय में दृश्य कला (रियल-टाइम विज़ुअल आर्ट) में रूपांतरित करता है।

**छवि 3:**

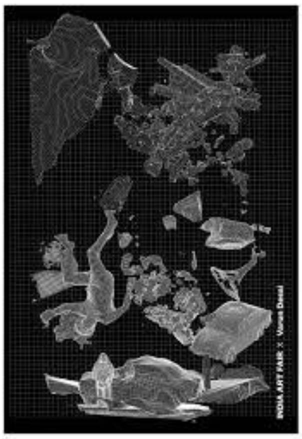

**छवि 3:** **“एल्गोरिदमिक एक्सप्रेशन्स”** (2020), वरुण देसाई
**स्रोत:** https://indiaartfair.in/decoding-the-future-varun-desai

यह कलाकृति प्रायः डिजिटल इंस्टॉलेशन या ऑडियोविज़ुअल परफ़ॉर्मेंस के रूप में प्रस्तुत की जाती है, जहाँ देसाई की रचनाएँ इंटरऐक्टिव टेक्नोलॉजी को सांस्कृतिक प्रतीकों के साथ जोड़ती हैं। उनके कार्य मानवीय शरीर की अनुभूति और डिजिटल रूप के बीच अमूर्त संबंधों की खोज करते हैं । यह उनकी कला को केवल तकनीकी

नहीं, बल्कि संवेदनशील और प्रतीकात्मक बनाता है। उनके प्रयोग स्थिर कला वस्तु की अवधारणा को चुनौती देते हैं और यह सुझाव देते हैं कि कला एक गतिशील, निरंतर परिवर्तित होने वाली प्रक्रिया हो सकती है जिसे बुद्धिमान प्रणालियों द्वारा संचालित किया जा सकता है।

ये कलाकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल एक रचनात्मक सहयोगी ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संलग्नता का एक उपकरण भी मानते हैं। उनके कार्य भारतीय कला पारिस्थितिकी तंत्र में उभरती उस व्यापक प्रवृत्ति को दर्शाते हैं, जहाँ कलाकार न केवल तकनीक के साथ प्रयोग कर रहे हैं, बल्कि पारंपरिक विषयवस्तुओं की नई डिजिटल शैलियों में पुनर्कल्पना भी कर रहे हैं।

## 6. कला निर्माण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के उपयोग से जुड़ी चुनौतियाँ

दृश्य कला में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति बढ़ते उत्साह के बावजूद, भारतीय सांस्कृतिक और कलात्मक परिदृश्य में इसकी समाविष्टि कई जटिल चुनौतियों के साथ आती है जो तकनीकी, नैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तरों पर विद्यमान हैं।

**1. स्वत्वाधिकार और प्रामाणिकता** कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित कलाकृतियों की सबसे प्रमुख चुनौतियों में से एक है स्वत्वाधिकार का प्रश्न। जब कोई कलाकृति किसी एल्गोरिदम के माध्यम से उत्पन्न होती है, तो मानव रचनात्मकता और मशीन के योगदान के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है। यह इस बहस को जन्म देता है कि रचनात्मक अधिकार किसके पास होंगे कलाकार, प्रोग्रामर, या स्वयं एआई प्रणाली के पास? भारत में, जहाँ पारंपरिक कला वंश परंपरा, हस्त कौशल और सामुदायिक ज्ञान में गहराई से निहित है, वहाँ मशीन-निर्मित कला की ओर बढ़ता रुझान सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता के लिए एक संभावित खतरे के रूप में देखा जा सकता है।

**2. सांस्कृतिक स्वामित्व का हरण और संदर्भ का क्षय-** माधुबनी या पटचित्रा जैसी पारंपरिक भारतीय कला शैलियों की पुनर्व्याख्या के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग यदि संवेदनशीलता के साथ नहीं किया गया, तो इससे उनकी सांस्कृतिक महत्ता कमज़ोर पड़ सकती है। ऐसे एल्गोरिद्म जो केवल संदर्भहीन छवियों पर प्रशिक्षित किए गए हैं, वे इन शैलियों की प्रतीकात्मक या अनुष्ठानिक अर्थवत्ता को समझे बिना ही उनकी नकल कर सकते हैं, जिससे सांस्कृतिक विरूपण की संभावना उत्पन्न होती है । यह समस्या विशेष रूप से भारत जैसे देश में गंभीर हो जाती है, जहाँ कला का गहरा संबंध क्षेत्रीय पहचान और जीवित अनुभवों से जुड़ा होता है। यह समस्या विशेष रूप से भारत जैसे देश में गंभीर हो जाती है, जहाँ कला का गहरा संबंध क्षेत्रीय पहचान और जीवन्त अनुभवों से जुड़ा होता है।

**3. सुलभता और डिजिटल विभाजन-** एआई आधारित कला निर्माण के लिए प्रायः उच्च तकनीकी कौशल, उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग संसाधनों तक पहुँच, और प्रोग्रामिंग का ज्ञान आवश्यक होता है जो भारत के अधिकांश कलाकारों, विशेषतः ग्रामीण या वंचित समुदायों से आने वाले कलाकारों के लिए सहज रूप से उपलब्ध नहीं है। यह तकनीकी अवरोध कलात्मक समुदाय के भीतर एक नए प्रकार के डिजिटल विभाजन को जन्म देता है,

जिसमें शहरी, अंग्रेज़ी भाषी और तकनीकी रूप से सशक्त रचनाकारों को पारंपरिक कलाकारों की तुलना में अधिक सुविधाएँ और मंच प्राप्त होते हैं।

**4. नैतिक और दार्शनिक चिंताएँ-** एआई-जनित कला रचनात्मकता, अंतर्ज्ञान और भावनात्मक श्रम से जुड़ी पुरानी सौंदर्यशास्त्रीय और दार्शनिक अवधारणाओं को चुनौती देती है। कई भारतीय कलाकार और विद्वान रचनात्मकता के यांत्रिकीकरण को लेकर चिंता व्यक्त करते हैं, उनका मानना है कि एल्गोरिदमिक प्रक्रियाएँ कला निर्माण की उन मानवीय विशेषताओं का स्थान ले सकती हैं जो आत्मिक चिंतन, हस्तनिर्मित कौशल और भावनात्मक अभिव्यक्ति से जुड़ी होती हैं।

**5. बाज़ार और संस्थागत प्रतिरोध-** भारतीय कला बाज़ार तथा उससे जुड़ी संस्थाएँ जैसे दीर्घाएँ, संग्राहक और क्यूरेटर एआई-निर्मित कला को "वैध" या संग्रहणीय के रूप में स्वीकारने में धीमी रही हैं। इसकी मूल्य, विशिष्टता और स्थायित्व को लेकर अब भी संदेह बना हुआ है। इसके अतिरिक्त, भारत में बौद्धिक संपदा और एआई-जनित सामग्री से संबंधित कानूनी ढाँचे अभी पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुए हैं, जिससे अधिकारों, पुनरुत्पादन, और व्यावसायिक उपयोग को लेकर अनिश्चितता बनी रहती है ।

इन चुनौतियों से यह स्पष्ट होता है कि हमें एक ऐसे संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो पारंपरिक कलात्मक मूल्यों का सम्मान करते हुए तकनीकी नवाचार को भी अपनाए। इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब कलाकारों, तकनीकी विशेषज्ञों, नीतिनिर्माताओं और सांस्कृतिक सिद्धांतकारों के बीच सहयोग हो ताकि भारत में दृश्य कला के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास नैतिक रूप से संतुलित और समावेशी रूप में हो सके।

**7. कला निर्माण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग से भविष्य की संभावनाएँ**

**1. मानव-एआई सहयोगात्मक रचनात्मकता-** भविष्य में कलाकारों और बुद्धिमान प्रणालियों के बीच अधिक सूक्ष्म और गतिशील सहयोग की संभावना है। मानव रचनात्मकता को प्रतिस्थापित करने के बजाय, एआई कलाकार की कल्पनाशक्ति का विस्तार करेगा ऐसे रूप, रंग और पैटर्न सुझाएगा जो पारंपरिक तरीकों से उत्पन्न नहीं हो सकते। यह सह-निर्माण के ऐसे मॉडल को प्रोत्साहित करेगा जिसमें कलाकार और एल्गोरिथ्म संवादात्मक संबंध में कार्य करते हैं, और एक-दूसरे के परिणामों को प्रभावित करते हैं।

**2. पारंपरिक कला रूपों का पुनरुद्धार और संरक्षण-** एआई भारत की दुर्लभ या संकटग्रस्त लोक और जनजातीय कला शैलियों का दस्तावेजीकरण, डिजिटलीकरण और पुनरुद्धार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भविष्य की परियोजनाओं में मशीन लर्निंग मॉडल को पारंपरिक डिज़ाइनों और रूपांकनों पर प्रशिक्षित कर उन शैलियों को संरक्षित किया जा सकता है जो लुप्त होने के कगार पर हैं। साथ ही, इंटरएक्टिव एआई टूल्स के माध्यम से पारंपरिक कारीगरों को डिजिटल माध्यमों पर अपनी कला प्रदर्शित करने और नए दर्शकों तक पहुँचने में सहायता मिल सकती है।

**3. वैयक्तिक और समग्र कला अनुभव-** एआई-आधारित कला धीरे-धीरे ऐसे अनुभवों की ओर अग्रसर हो रही है जो दर्शकों की भावनाओं, व्यवहार या सांस्कृतिक पहचान के अनुसार अनुकूलित किए जा सकें। डेटा

एनालिटिक्स और रियल-टाइम प्रोसेसिंग की सहायता से, भविष्य की आर्ट गैलरीज़ या डिजिटल प्रदर्शनियाँ दर्शकों के साथ गहराई से संवाद कर सकेंगी, जिससे हर व्यक्ति के लिए एक अनूठा सौंदर्य अनुभव सृजित होगा।

**4. एआई कला शिक्षा और कौशल विकास-** जैसे-जैसे एआई कला निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा बन रहा है, भारत में कला संस्थान अपने पाठ्यक्रमों में एआई-कला से जुड़े मॉड्यूल शामिल कर सकते हैं। इससे एक ऐसी नई पीढ़ी तैयार होगी जो रचनात्मकता और कम्प्यूटेशनल सोच दोनों में पारंगत होगी। यह अंतःविषय प्रशिक्षण विविध पृष्ठभूमियों से आए छात्रों को एआई टूल्स का उपयोग करके अभिव्यक्ति के नए तरीके खोजने में सक्षम बनाएगा।

## 8. निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भारतीय दृश्य कला में एकीकरण रचनात्मक प्रयोगों और सांस्कृतिक संवाद का एक नया युग लेकर आया है। इस अध्ययन का एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव रचनात्मकता को प्रतिस्थापित नहीं कर रहा है, बल्कि उसे सशक्त और विस्तारित कर रहा है। इसके माध्यम से कलाकार जटिल दृश्य आख्यानों का अन्वेषण कर पा रहे हैं, पारंपरिक कला रूपों की पुनः कल्पना कर रहे हैं, और दर्शकों को नए और अभिनव तरीकों से जोड़ने में सक्षम हो रहे हैं। भारत में कलाकार तेजी से कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग ऐसे मिश्रित (हाइब्रिड) कलाकृतियाँ बनाने के लिए कर रहे हैं, जो तकनीकी प्रगति और गहराई से निहित सांस्कृतिक प्रतीकों दोनों का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं। भारतीय कलाकारों द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग ने लोक और शास्त्रीय परंपराओं की पुनर्व्याख्या को संभव बनाया है, जहाँ मशीन द्वारा उत्पन्न कृतियाँ क्षेत्रीय शिल्पकला और प्रतीकात्मकता से प्रेरणा लेकर समकालीन दृश्य अभिव्यक्तियों में परिवर्तित हो रही हैं । इस परंपरा और तकनीक के संगम से भारतीय समकालीन कला में एक बढ़ती हुई प्रवृत्ति परिलक्षित होती है, जो देशज सौंदर्यशास्त्र को डिजिटाइज़ करने और उसे नए संदर्भों में प्रस्तुत करने की दिशा में अग्रसर है।

अध्ययन यह भी उजागर करता है कि भारत में प्रदर्शनियों और संस्थागत स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता -जनित कलाकृतियों के प्रति सक्रिय रुचि बढ़ रही है। कोच्चि-मुज़िरिस बिएनाले जैसे उपक्रम और इमर्जेंट आर्ट स्पेस जैसी डिजिटल गैलरीज़ ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित कृतियों को प्रदर्शित करना प्रारंभ कर दिया है, जो तकनीक-आधारित कलात्मक प्रवृत्तियों की ओर संस्थागत परिवर्तन का संकेत है । इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्मों के उदय ने भारतीय डिजिटल कलाकारों को वैश्विक दर्शकों के समक्ष कृत्रिम बुद्धिमत्ता -निर्मित कृतियाँ प्रस्तुत करने का अवसर दिया है, जिससे अंतर-सांस्कृतिक संवाद और सहयोग को बढ़ावा मिल रहा है।

समग्र रूप से, निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि यद्यपि कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारतीय दृश्य कला में तेजी से एक महत्वपूर्ण उपकरण बनती जा रही है, फिर भी इसकी सफलता और स्थायित्व इस बात पर निर्भर करता है कि इसे व्यापक पहुँच, सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा नीतिगत समर्थन के साथ किस प्रकार समावेशी और उत्तरदायी रूप में एकीकृत किया जाता है।

## संदर्भ सूची

1. मक्कॉर्मैक, जे., गिफोर्ड, टी., & हचिंग्स, पी. (2019). *कंप्यूटर जनित कला में स्वायत्तता, प्रामाणिकता, लेखकत्व और मंशा.* कम्प्यूटेशनल क्रिएटिविटी पर 10वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही, 208–215.
2. चक्रवर्ती, ए. (2017). *भारत में कला और परंपरा: दृश्य संस्कृति में निरंतरता और परिवर्तन.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
3. मनोविच, एल. (2020). *एआई सौंदर्यशास्त्र.* मॉस्को: स्ट्रील्का प्रेस। ISBN 978-5-907163-00-3
4. मक्कॉर्मैक, जे., गिफोर्ड, टी., & हचिंग्स, पी. (2019). *कंप्यूटर जनित कला में स्वायत्तता, प्रामाणिकता, लेखकत्व और मंशा.* कम्प्यूटेशनल क्रिएटिविटी पर 10वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही, 208–215.
5. रविंद्रन, एस. (2021). *परंपरा की पुनर्कल्पना: न्यूरल नेटवर्क और भारतीय लोक कला.* कल्चरल क्रिटीक, 108(3), 88–107.
6. मेहरा, र. (2020). *एल्गोरिद्मिक सौंदर्य: भारत में एआई-जनित कला की प्रदर्शनी.* आर्ट इंडिया मैगज़ीन, 25(4), 56–61.
7. राघव, के. के. (2019). डीप मेडिटेशन: दृश्य कला में भावना और एआई की खोज।
8. जोशी, प. (2022). *कला और एल्गोरिद्म का संगम: भारतीय स्टार्टअप्स रचनात्मकता को फिर से परिभाषित कर रहे हैं.* इंडिया टुडे टेक.
9. रविंद्रन, एस. (2021). *परंपरा की पुनर्कल्पना: न्यूरल नेटवर्क और भारतीय लोक कला.* कल्चरल क्रिटीक, 108(3), 88–107.
10. नीति आयोग. (2018). *कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए राष्ट्रीय रणनीति.* भारत सरकार.
11. एल्गाम्मल, ए., लियू, बी., एलहोसेनी, एम., & मैज़ोन, एम. (2017). *CAN: क्रिएटिव एडवर्सरियल नेटवर्क्स.* arXiv preprint arXiv:1706.07068.
12. मिश्रा, अ. (2021). *भारत के रचनात्मक क्षेत्र में डिजिटल विभाजन को पाटना: एआई को अपनाने की चुनौतियाँ.* साउथ एशियन जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज, 10(2), 120–135.